CBSE Class 12 हिंदी कोर

Sample Paper 02 (2020-21)

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

i. इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं – खंड – अ और खंड – ब। खंड-अ में वस्तुपरक तथा खंड-ब में वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।

ii. खंड-अ में कुल 6 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

iii. खंड-ब में कुल 8 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न भी सम्मिलित हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड-अ वस्तुपरक प्रश्न

1. **निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**

किसी भी समाज में इने - गिने लोगों को 'अमिताभ बच्चन' 'दिलीप कुमार' कहकर ताना दिया जाता है लेकिन किसी भी व्यक्ति को परिस्थितियों औचित्य देखते हुए 'चार्ली' या 'जॉनी वाकर' कह दिया जाता है। यह स्वयं एक स्वीकारोक्ति है कि हमारे बीच नायक कम हैं जबकि हर व्यक्ति दूसरे को कभी न कभी विदूषक समझता है। दरअसल मनुष्य स्वयं ईश्वर या नियति का विदूषक, क्लाउन , जोकर या साइड-किक है। यह अकारण नहीं हैं कि महात्मा गांधी से चार्ली चैप्लिन का खासा पुट था और गांधी और नेहरू दोनों ने कभी चार्ली का सान्निध्य चाहा था। चार्ली के नितांत अभारतीय सौंदर्यशास्त्र की इतनी व्यापक स्वीकृति देखकर राजकपूर ने भारतीय फिल्मों का एक सबसे साहसिक प्रयोग किया। 'आवारा' सिर्फ 'दि ट्रैम्प' का शब्दानुवाद ही नहीं था बल्कि चार्ली का भारतीयकरण ही था। वह अच्छा ही था कि राजकपूर ने चैप्लिन की नकल करने के आरोपों की परवाह नहीं की। राजकपूर के 'आवारा' और 'श्री 420' के पहले फिल्मी नायकों पर हँसने की और स्वयं नायकों के अपने पर हँसने की परंपरा नहीं थी। 1953-57 के बीच जब चैप्लिन अपनी गैर - ट्रैम्पुम्मा अंतिम फ़िल्में बना रहे थे तब तक राजकपूर चैपलिन का युवा अवतार ले रहे थे। फिर तो दिलीप कुमार (बाबुल, शबनम, कोहिनूर, लीडर, गोपी), देव आनंद (नौ दो ग्यारह, फंटूश, तीन देवियाँ), शम्मी कपूर, अमिताभ बच्चन (अमर अकबर एंथनी) और श्रीदेवी तक किसी-ना-किसी रूप से चैप्लिन का ऋण स्वीकार कर चुके हैं। बुढ़ापे में जब अर्जुन अपने दिवंगत मित्र कृष्ण की पत्नियों को डाकुओं से न बचा सके और हवा में तीर चलाते रहे तो यह दृश्य करुण और हास्योत्पादक दोनों था किंतु महाभारत में सिर्फ़ उसकी त्रासद व्याख्या स्वीकार की गई । आज फ़िल्मों में किसी नायक को झाड़ुओं से पिटता भी

दिखाया जा सकता है लेकिन हर बार हमें चार्ली की ही ऐसी फजीहतें याद आती हैं।
चार्ली की अधिकांश फ़िल्में भाषा का इस्तेमाल नहीं करतीं इसलिए उन्हें ज़्यादा-से-ज्यादा मानवीय होना पड़ा। सवाक चित्रपट पर कई बड़े-बड़े कॉमेडियन हुए हैं, लेकिन वे चैप्लिन की सार्वभौमिकता तक क्यों नहीं पहुँच पाए इसकी पड़ताल अभी होने को है। चार्ली का चिर - युवा होना या बच्चों जैसी दिखना एक विशेषता तो है ही, सबसे बड़ी विशेषता शायद यह है कि वे किसी भी संस्कृति को विदेशी नहीं लेते। यानी उनके आसपास जो भी चीजें, अड़गे, खलनायक, दुष्ट औरतें आदि रहती हैं वे एक सतत 'विदेश' या 'परदेस' बन जाते हैं और चैप्लिन 'हम' बन जाते हैं। चार्ली के सभी संकटों में हमें यह भी लगता है कि यह 'मैं' भी हो सकता है, लेकिन 'मैं' से ज्यादा चार्ली हमें 'हम' लगते हैं। यह संभव है कि कुछ अर्थों में 'बस्टर कीटन' चार्ली चैप्लिन से बड़ी कॉम - प्रतिभा हो लेकिन कीटन हास्य का काफ्का है जबकि चैपलिन प्रेमचंद के ज्यादा नज़दीक हैं।
एक होली का त्योहार छोड़ दें तो भारतीय परंपरा में व्यक्ति के अपने पर हँसने, स्वयं को जानते-बुझते हास्यास्पद बना डालने की परंपरा नहीं के बराबर है। गाँवों और लोक - संस्कृति में तब भी वह शायद हो , नागर सभ्यता में तो वह नहीं था। चैप्लिन का भारत में महत्त्व यह है कि वह अंग्रेजों जैसे 'व्यक्तियों पर हँसने का अवसर देते हैं। चार्ली स्वयं पर सबसे ज्यादा तब हँसता है जब वह स्वयं को अभिमोन्मत्त, आत्म - विश्वास से लबरेज़, सफलता, सभ्यता, संस्कृति और समृद्धि की प्रतिमूर्ति, दूसरों से ज्यादा प्रतिस्पर्धी और श्रेष्ठ, अपने 'वज्रादपि कठोराणि' या 'मृदुनी कुसुमादपि' क्षण में दिखलाता है। तब यह समझिए कि कुछ ऐसा हुआ ही चाहता है कि यह सारा गरिमा सुई - चुभे जैसा हो फुस्स हो उठेगी ।

01. चार्ली चैपलिन का युवा अवतार किसे कहा जाता है ?
(क) शम्मी कपूर
(ख) दिलीप कुमार
(ग) राजकपूर
(घ) अमिताभ बच्चन

02. चार्ली चैपलिन किसके ज़्यादा नजदीक हैं ?
(क) प्रेमचंद
(ख) बस्टर कीटन
(ग) राजकपूर
(घ) काफ्का

03. किस फिल्म से नायक पर हंसने की परंपरा की शुरुआत हुई ?
(क) गोपी
(ख) दि ट्रैम्प
(ग) लीडर
(घ) श्री 420

04. चार्ली की अधिकांश फिल्में कैसी होती थी ?

(क) सवाक्

(ख) विदेशी

(ग) मूक

(घ) हास्य

05. भाषा का कम इस्तेमाल करने के कारण चार्ली की फिल्में कैसी होती थी ?

(क) अमानवीय

(ख) प्रेम

(ग) हास्य

(घ) मानवीय

06. कौन सी भारतीय फिल्म चार्ली का भारतीयकरण थी ?

(क) आवारा

(ख) दि ट्रैम्प

(ग) कोहिनूर

(घ) श्री 420

07. चार्ली की नकल को भारतीय फिल्मों में लाने का श्रेय किसको जाता है ?

(क) देव आनंद

(ख) शम्मी कपूर

(ग) राजकपूर

(घ) बस्टर कीटन

08. फिल्मों में चार्ली की संकटों को देखकर कैसा महसूस होता है ?

(क) हम ही चार्ली हैं

(ख) चार्ली का बच्चा दिखना

(ग) हास्यास्पद

(घ) रोने जैसा

09. प्रस्तुत गद्यांश किसके विषय में है ?

(क) राज कपूर

(ख) चार्ली चैपलिन

(ग) बस्टर कीटन

(घ) अमिताभ बच्चन

10. बस्टर कीटन की तुलना किससे की गई है ?

(क) चार्ली चैपलिन

(ख) प्रेमचंद

(ग) काफ्का

(घ) महात्मा गाँधी

OR

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मनुष्य के जीवन में लक्ष्य का होना बहुत आवश्यक है। लक्ष्य के बिना जीवन दिशाहीन तथा व्यर्थ ही है। एक बार एक दिशाहीन युवा आगे बढ़े जा रहा था, राह में महात्मा जी की कुटिया देख रूककर महात्मा जी से पूछने लगा कि यह रास्ता कहाँ जाता है? महात्मा जी ने पूछा "तुम कहाँ जाना चाहते हो "? युवक ने कहा "मैं नहीं जानता मुझे कहाँ जाना है "। महात्मा जी ने कहा "जब तुम्हें पता ही नहीं है कि तुम्हें कहाँ जाना है, तो यह रास्ता कहीं भी जाए, इससे तुम्हें क्या फर्क पड़ेगा "? कहने का मतलब है कि बिना लक्ष्य के जीवन में इधर-उधर भटकते रहिये कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाओगे। यदि कुछ करना चाहते तो पहले अपना एक लक्ष्य बनाओ और उस पर कार्य करो। अपनी राह स्वयं बनाओ। वास्तव में जीवन उसी का सार्थक है जिसमें परिस्थितियों को बदलने का साहस है।

गांधीजी कहते थे कुछ न करने से अच्छा है, कुछ करना। जो कुछ करता है वही सफल-असफल होता है। हमारा लक्ष्य कुछ भी हो सकता है, क्योंकि हर इंसान की अपनी-अपनी क्षमता होती है और उसी के अनुसार वह लक्ष्य निर्धारित करता है। जैसे विद्यार्थी का लक्ष्य है सर्वाधिक अंक प्राप्त करना तो नौकरी करने वालों का लक्ष्य होगा पदोन्नति प्राप्त करना। इसी तरह किसी महिला का लक्ष्य आत्मनिर्भर होना हो सकता है। ऐसा मानना है कि हर मनुष्य को बड़ा लक्ष्य बनाना चाहिए किन्तु बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छोटे-छोटे लक्ष्य बनाने चाहिए। जब हम छोटे लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं तो बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने का हममें आत्मविश्वास आ जाता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जीवन में एक ही लक्ष्य बनाओ और दिन-रात उसी के बारे में सोचो। स्वप्न में भी तुम्हें वही लक्ष्य दिखाई देना चाहिए, उसे पूरा करने की एक धुन सवार हो जानी चाहिए। बस सफलता आपको मिली ही समझो। सच तो यह है कि जब आप कोई काम करते हैं तो यह जरुरी नहीं कि सफलता मिले ही लेकिन असफलता से भी घबराना नहीं चाहिए। इस बारे में स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि हजार बार प्रयास करने के बाद भी यदि आप हार कर गिर पड़ें तो एक बार पुनः उठें और प्रयास करें। हमें लक्ष्य प्राप्ति तक स्वयं पर विश्वास रखना चाहिए।

I. युवक कहाँ जा रहा था?
   i. दिशाहीन लक्ष्य की ओर
   ii. दिशासहित लक्ष्य की ओर
   iii. लक्ष्य की ओर
   iv. मंजिल की ओर

II. किसी विद्यार्थी का लक्ष्य क्या होना चाहिए ?
   i. आत्मनिर्भर होना

ii. सर्वाधिक अंक प्राप्त करना

iii. परीक्षा में उत्तीर्ण होना

iv. सफल बनना

III. किसी महिला का लक्ष्य क्या होना चाहिए ?

i. आत्मनिर्भर बनना

ii. परावलम्बी बनना

iii. खुश होना

iv. गृहस्थ बनना

IV. व्यक्ति अपना लक्ष्य कैसे निर्धारित करता है ?

i. अपनी क्षमता के अनुसार

ii. अपने सुख के अनुसार

iii. अपने दुःख के अनुसार

iv. अपने कार्य के अनुसार

V. छोटे लक्ष्य प्राप्त करने पर क्या होता है ?

i. मनुष्य का लक्ष्य पूरा हो जाता है।

ii. मनुष्य में आत्मविश्वास आ जाता है।

iii. मनुष्य सुखी हो जाता है।

iv. मनुष्य दुखी हो जाता है।

VI. किसका जीवन सार्थक है ?

i. जो परिस्थितियों को बदलने का साहस रखता है।

ii. जो परिस्थितियों को बदलने का साहस नहीं रखता है।

iii. जो इधर - उधर भटकता रहता है।

iv. जो लक्ष्य की पर्पटी नहीं कर पाता।

VII. बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए ?

i. छोटे - छोटे लक्ष्य बनाने चाहिए।

ii. बड़े - बड़े लक्ष्य बनाने चाहिए।

iii. छोटे - छोटे लक्ष्य नहीं बनाने चाहिए।

iv. छोटे - बड़े लक्ष्य बनाने चाहिए।

VIII. लक्ष्य के बिना जीवन कैसा हो जाता है ?

i. दिशाहीन

ii. व्यर्थ

iii. दिशाहीन, व्यर्थ

iv. आत्मविश्वासी

IX. हमें कब तक स्वयं पर विश्वास रखना चाहिए ?

i. लक्ष्य प्राप्ति तक

ii. लक्ष्य प्राप्त न होने पर

iii. असफलता मिलने पर

iv. प्रयास न करने पर

X. 'असफल' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है -

i. अ

ii. अस

iii. सफल

iv. ल

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए।**

हम जब होंगे बड़े, देखना
ऐसा नहीं रहेगा देश।
अब भी कुछ लोगों के दिल में
नफरत अधिक प्यार है कम,
हम जब होंगे बड़े, घृणा का
नाम मिटा कर लेंगे दम।
हिंसा के विषमय प्रवाह में
कब तक और बहेगा देश?
भ्रष्टाचार, जमाखोरी की
आदत बड़ी पुरानी है,
ये कुरीतियाँ मिटा हमें तो
नई चेतना लानी है।
एक घरौंदे जैसा आखिर
कितना और ढहेगा देश ?
इस की बागडोर हाथों में
जरा हमारे आने दो,
पाँव हमारे थोड़े-से बस,
जीवन में टिक जाने दो।
हम खाते है शपथ, दुर्दशा
कोई नहीं सहेगा देश।
हम भारत का झंडा हिमगिरि
से ऊँचा फहरा देंगे,

रेगिस्तान बंजरों तक में
हरियाली लहरा देंगे।
घोर अभावों की ज्वाला में
बिल्कुल नहीं दहेगा देश।

I. काव्यांश का मूल स्वर क्या है?
   i. चुनौती का
   ii. संकल्प का
   iii. प्रश्न का
   iv. चिंता का

II. कवि कौन सा परिवेश बदलना चाहता है?
   i. प्यार का
   ii. संघर्ष का
   iii. घृणा का
   iv. शांति का

III. कवि की क्या अवस्था है?
   i. बाल्यावस्था
   ii. वृद्धावस्था
   iii. प्रौढ़ावस्था
   iv. युवावस्था

IV. कवि क्या बनना चाहता है?
   i. प्रधानमंत्री
   ii. राष्ट्रपति
   iii. लोकनेता
   iv. अधिनायक

V. कवि के मन में नई चेतना तब आएगी जब -
   i. सब प्रगति करेंगे
   ii. पुरानी प्रथाएँ समाप्त हो जाएंगी
   iii. भ्रष्टाचार, जमाखोरी आदि कुप्रथाएँ समाप्त हो जाएँगी
   iv. कवि के हाथ में बागडोर आएगी

OR

मैंने झुक नीचे को देखा तो झलकी आशा की रेखा –
विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिल शिव पर दूर्वादल, तंदुल, तिल,

लेकर झोली आए ऊपर देखकर चले तत्पर वानर
द्विज रामभक्त, भक्ति की आश भजते शिव को बारहों मास।
कर रामायण का पारायण जपते हैं श्रीमन्नारायण।
दु:ख पाते जब होते अनाथ, कहते कपियों के जोड़ हाथ।
मेरे पड़ोस के वे सज्जन, करते प्रतिदिन सरिता मज्जन।
झोली से पुए निकाल लिए बढ़ते कपियों के हाथ दिये।
देखा भी नहीं उधर फिर कर जिस ओर रही वह भिक्षु इतर।
चिल्लाया किया दूर दानव, बोला मैं-'धन्य, श्रेष्ठ मानव'।

I. कवि ने नीचे क्या देखा?
   i. ऊपर आते एक ब्राह्मण
   ii. नीचे जाते एक ब्राह्मण
   iii. पूजा करते एक ब्राह्मण
   iv. स्नान करते एक ब्राह्मण

II. स्नान करने के पश्चात् विप्रवर क्या करते थे?
   i. ऊपर आ जाते थे
   ii. घर चले जाते थे
   iii. रामायण पढ़ते थे
   iv. ध्यान करते थे

III. विप्र ने पुए किसे खाने को दिए?
   i. भिक्षुक को
   ii. कवि को
   iii. बंदरों को
   iv. कवि को

IV. कवि ने मानव को धन्य किस शैली में कहा है?
   i. व्यंग्यात्मक शैली में
   ii. करुणामयी शैली में
   iii. प्रश्नात्मक शैली में
   iv. आशावादी शैली में

V. कवि को क्या आशा थी?
   i. कि विप्र भिक्षुक को खाना देगा।
   ii. कि विप्र भिक्षुक को खाना नहीं देगा।
   iii. कि विप्र अच्छा व्यक्ति है।
   iv. कि विप्र अच्छा व्यक्ति नहीं है।

3. कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए।

a. प्रिंट मीडिया के प्रमुख माध्यम होते हैं-

a. पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएँ

b. पत्र-पत्रिकाएँ

c. इंटरनेट

d. पुस्तकें

b. समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली के तहत लिखे गये समाचारो के सुविधा की दृष्टि से मुख्यत: _____ हिस्सों में विभाजित किया जाता है।

a. चार

b. पाँच

c. दो

d. तीन

c. रडियो समीक्षा में क्या आवश्यक नहीं है?

a. दुरूह भाषा

b. अंकों को शब्दों में लिखना

c. समान्य भाषा

d. मुहावरेदार भाषा

d. दिलचस्पी और ज्ञान के आधार पर संवाददाताओं के बीच किया गया कार्य विभाजन कहलाता है -

a. रिपोर्टिंग

b. एंकरिंग

c. बीट

d. बाइट

e. आज के छापेखाने का श्रेय किसको जाता है ?

a. यूरोप को

b. मिशनरियों को

c. चीनियों को

d. गुटेनबर्ग

4. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका-देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी

I. काव्यांश में **रह-रह के** में कौन सा अलंकार है?
   i. उपमा अलंकार
   ii. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
   iii. वक्रोक्ति अलंकार
   iv. अनुप्रास अलंकार

II. काव्यांश के भाषा की क्या विशेषता है?
   i. रस का प्रयोग
   ii. बिम्ब
   iii. तुकांतता
   iv. सहजता

III. काव्यांश में श्रव्य बिम्ब का एक उदाहरण बताइए।
   i. हवा में लोकाती
   ii. चाँद का टुकड़ा
   iii. हँसी की खिलखिलाहट
   iv. गोद भरी

IV. काव्यांश में कौन सा छंद प्रयोग किया गया है?
   i. रुबाई
   ii. कवित्त
   iii. सवैया
   iv. दोहा

V. **आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी** पंक्ति में चाँद का टुकड़ा किसे कहा गया है?

i. माँ को

ii. चाँद को

iii. बच्चे को

iv. चाँद की परछाई को

5. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

I. लेखक किस विडंबना की बात कह रहा हैं?

i. जातिवाद को बढ़ावा देना

ii. कार्य-कुशलता का अभाव

iii. बेरोजगारी

iv. सभ्य समाज का अभाव

II. जातिवाद के पोषक अपने समर्थन में क्या तर्क देते हैं?

i. सभ्य समाज

ii. कार्य कुशलता

iii. श्रमविभाजन

iv. श्रमिक विभाजन

III. लेखक क्या आपत्ति दर्ज कर रहा है?

i. श्रम का अभाव

ii. श्रम विभाजन

iii. श्रमिक विभाजन

iv. श्रमिकों का अनादर

IV. जातियाँ किस आधार पर विभाजित है?

i. कर्म

ii. धर्म

iii. नाम

iv. पद

V. यह गदयांश किस पाठ से अवतरित है?

i. शिरीष के फूल
ii. नमक
iii. श्रम विभाजन और जातिप्रथा
iv. बाजार दर्शन

6. निम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए:

a. यशोधर बाबू ने शाम को कितनी देर तक पूजा किया?

a. 10 मिनट

b. 25 मिनट

c. 15 मिनट

d. 40 मिनट

b. यशोधर पंत के जीवन के अधिकांश विचार किससे लिए हुए थे?

a. चड्ढा

b. किशनदा पांडे

c. मेनन

d. भगवानदास

c. लेखक की माँ लेखक को कहाँ तक पढ़ाने का सोच रखी थी? **[जूझ]**

a. सातवीं

b. दसवीं

c. छठी

d. पाँचवीं

d. **जूझ** पाठ में लेखक की पढ़ाई कहाँ तक होकर रुक गई थी?

a. आठवीं

b. पाँचवीं

c. छठी

d. चौथी

e. **अतीत में दबे पाँव** पाठ के अनुसार मोहनजोदड़ो में प्रयोग हुए ईंटों का अनुपात क्या है?

a. 2:3:4

b. 1:3:5

c. 1:2:4

d. 3:2:4

f. सिंधु घाटी में किस फसल के बीज नहीं मिलते? **[अतीत में दबे पाँव]**

a. ज्वार

b. अंगूर

c. कपास

d. गेहूँ

g. मुअनजो-दड़ो किस काल का एक शहर है? **[अतीत में दबे पाँव]**

a. पाषाण काल

b. आदि काल

c. ताम्र काल

d. आधुनिक काल

h. **डायरी के पन्ने** पाठ में किसका चित्रण है?

a. यातना शिविर

b. अमेरिका

c. प्रकृति

d. ब्रिटेन

i. ऐन के जन्मदिन पर मार्गोट ने उसे क्या तोहफा दिया था? **[डायरी के पन्ने]**

a. मिठाई

b. किताब

c. फल

d. ब्रेसलेट

j. **डायरी के पन्ने** पाठ के अनुसार आधुनिक महिलायें क्या चाहती थी?

a. बल

b. गुलामी

c. भावना

d. स्वतंत्रता

खंड-ब वर्णात्मक प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लिखिये:

a. **शिक्षा और व्यवसाय** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

b. **आज की बचत कल का सुख** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

c. **प्राकृतिक आपदाएँ** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

8. सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध नियम के उल्लंघन को लेकर अपने राज्य के पर्यावरण मंत्री को पत्र लिखिए।

OR

समाज में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और समाधान का एक सुझाव भी दीजिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

a. रेडियो नाटक में पात्र संबंधी किन महत्वपूर्ण बातों की जानकारी मिलती है स्पष्ट कीजिए

OR

कहानी के दृश्य का संवाद करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

b. कहानी के दृश्य में परिवेश का विवरण या विवरणात्मक टिप्पणियों को किस तरह सम्बोधित किया जाता है?

OR

रेडियो नाटक की कहानी चुनते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

a. किन-किन विषयों पर विशेष लेखन किया जा सकता है?

OR

साफ़-सुथरी और सरल भाषा के लिए क्या जरूरी है ?

b. समाचार लेखन की विलोमस्तूपी पद्धति क्या है?

OR

फीचर किसे कहते हैं?

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है - विचार कीजिए।

b. **उषा** कविता में किन उपमानों को देख कर कहा जा सकता है कि गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है?

c. व्याख्या करें - (मूर्च्छा और राम का विलाप)
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. **सहर्ष स्वीकारा है** कविता में कवि का संबोध्य कौन है? आप ऐसा क्यों मानते हैं?

b. शायर **फ़िराक़ गोरखपुरी** राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

c. कुंभकरण ने रावण को किस सच्चाई का आईना दिखाया?

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. भक्तिन के ससुरालवालों का उसके प्रति व्यवहार कैसा था?

b. तकनीकी विकास के दौर में भी भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। कृषि समाज में चैत्र, वैशाख सभी माह बहुत

महत्त्वपूर्ण है पर आषाढ़ का चढ़ना उनमें उल्लास क्यों भर देता है?

c. शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. लेखक जैनेंद्र कुमार ने बाजार का जादू किसे कहा है, इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

b. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?

c. फिर पलकों से कुछ सितारे टूटकर दूधिया आँचल में समा जाते हैं। **नमक** पाठ के आधार पर अर्थ समझाइए।

12 Hindi Core SP-02

Class 12 - हिंदी कोर

Solution

खंड-अ वस्तुपरक प्रश्न

1. 01. (ग) राजकपूर
   02. (क) प्रेमचंद
   03. (घ) श्री 420
   04. (ग) मूक
   05. (घ) मानवीय
   06. (क) आवारा
   07. (ग) राजकपूर
   08. (क) हम ही चार्ली हैं
   09. (ख) चार्ली चैपलिन
   10. (ग) काफ्का

   OR

   I. (i) दिशाहीन लक्ष्य की ओर
   II. (ii) सर्वाधिक अंक प्राप्त करना
   III. (i) आत्मनिर्भर बनना
   IV. (i) अपनी क्षमता के अनुसार
   V. (ii) मनुष्य में आत्मविश्वास आ जाता है
   VI. (i) जो परिस्थितियों को बदलने का साहस रखता है
   VII. (i) छोटे - छोटे लक्ष्य बनाने चाहिए
   VIII. (iii) दिशाहीन, व्यर्थ
   IX. (i) अ
2. I. (ii) संकल्प का
   II. (iii) घृणा का
   III. (iv) युवावस्था
   IV. (iv) अधिनायक
   V. (iv) कवि के हाथ में बागडोर आएगी

OR

I. (i) ऊपर आते एक ब्राह्मण
II. (iii) रामायण पढ़ते थे
III. (iii) बंदरों को
IV. (i) व्यंग्यात्मक शैली में
V. (i) कि विप्र भिक्षुक को खाना देगा।

3. कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए।

a. (a) पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएँ
Explanation: प्रिंट मीडिया के प्रमुख माध्यम होते हैं-अखबार, पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएँ आदि।
b. (d) तीन
Explanation: तीन
c. (a) दुरूह भाषा
Explanation: रडियो समीक्षा में दुरूह भाषा आवश्यक नहीं है।
d. (c) बीट
Explanation: मीडिया की भाषा में इस तरह का कार्य विभाजन बीट कहलाता है।
e. (d) गुटेनबर्ग
Explanation: वर्तमान में जो छापेखाने हैं, उनका श्रेय जर्मनी के गुटेनबर्ग को जाता है।

4. I. (ii) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
II. (iv) सहजता
III. (iii) हँसी की खिलखिलाहट
IV. (i) रुबाई
V. (iii) बच्चे को

5. I. (i) जातिवाद को बढ़ावा देना
II. (iii) श्रम-विभाजन
III. (iii) श्रमिक-विभाजन
IV. (i) कर्म
V. (iii) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

6. निम्नलिखित प्रश्नों में निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए:

a. (b) 25 मिनट
Explanation: पाठ के अनुसार यशोधर बाबू ने शाम को 25 मिनट तक पूजा किया। वे पार्टी में आए मेहमानों के

समक्ष नहीं जाना चाहते थे, इसीलिए उस दिन उन्होंने अधिक देर तक पूजा किया।

b. (b) किशनदा पांडे

Explanation: किशनदा का असली नाम कृष्णानन्द पांडे था। यशोधर अपनी मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद उनके पास आ गए थे। इतने दिन साथ में रहने से यशोधर बाबू के जीवन के अधिकांश विचार किशनदा से मिलते थे।

c. (a) सातवीं

Explanation: लेखक की माँ ने उसे सातवीं कक्षा तक पढ़ाने का सोच कर रखा था। लेकिन वो इस बात को खुलकर कह नहीं पाती थी।

d. (d) चौथी

Explanation: पाठ के अनुसार लेखक की पढ़ाई चौथी कक्षा तक होकर रोक दी जाती है। वह जब पाँचवीं कक्षा में गया, तब उसके पिता ने उसे स्कूल जाने से रोक दिया था।

e. (c) 1:2:4

Explanation: पाठ के अनुसार मोहनजोदड़ो में ईंटों का अनुपात 1:2:4 है। यहाँ पर सारे इमारतों में पक्के ईंटों का ही प्रयोग किया गया है।

f. (c) कपास

Explanation: पाठ के अनुसार सिंधु घाटी में खुदाई के दौरान कपास को छोड़कर बाकी सारे फसलों के बीज मिलते हैं। लेकिन प्रमाण के लिए सूती के कपड़े मिलते हैं।

g. (c) ताम्र काल

Explanation: मुअनजो-दड़ो जिसे अब मोहनजोदड़ो के नाम से जाना जाता है, वह ताम्र काल का है। ताम्र काल के शहरों में मोहनजोदड़ो सबसे बड़ा और उत्कृष्ट शहर माना गया है।

h. (a) यातना शिविर

Explanation: प्रस्तुत पाठ ऐन फ्रैंक की डायरी 'डायरी ऑफ अ यंग गर्ल' का अनुवाद है। इसमें जर्मनी में यातना शिविर की कष्टों का वर्णन है।

i. (d) ब्रेसलेट

Explanation: ऐन के पंद्रहवें जन्मदिन पर उसकी बहन मार्गोट ने उसे एक सोने का ब्रेसलेट उपहार में दिया था।

j. (d) स्वतंत्रता

Explanation: पाठ के अनुसार आधुनिक महिलायें पुरुषों की गुलामी से छुटकारा चाहती हैं, वे इस प्रथा के खिलाफ हैं जिसमे पुरुष ही मालिक होते हैं। वे पूरी तरह स्वतंत्र होने का हक चाहती हैं।

खंड-ब वर्णात्मक प्रश्न

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लिखिये:

a. **शिक्षा और व्यवसाय**

शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर-ज्ञान या पूर्व जानकारी की पुनरावृत्ति नहीं है। इसका अर्थ कार्य या व्यवसाय दिलाना भी नहीं है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है-व्यक्ति को अक्षर-ज्ञान कराकर उसमें अच्छे-बुरे में अंतर करने का विवेक उत्पन्न

करना। मनुष्य के सहज मानवीय गुणों व शक्तियों को उजागर करना शिक्षा का कार्य है , ताकि मनुष्य जीवन जीने की कला सीख सके। ऐसा कर पाने में समर्थ शिक्षा को ही सही अर्थों में शिक्षा कहा जा सकता है। शिक्षा प्राप्त करने के साथ मनुष्य को जीवन-निर्वाह के लिए कोई-न-कोई व्यवसाय या रोजगार करना पड़ता है।

शिक्षा व रोजगार का प्रत्यक्ष तौर पर भले ही कोई संबंध न हो, परंतु शिक्षा से व्यवसाय में बढ़ोतरी हो सकती है-इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है। आज के समय में शिक्षा का अर्थ व उद्देश्य यह लिया जाता है, कि डिग्रियाँ हासिल करने से कोई नौकरी या रोजगार अवश्य मिलेगा। इसी कारण से शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य से भटक चुकी है।अब वो समय नहीं रह गया है, जब डिग्रियों से रोजगार मिलता था।अनेक युवा अपनी डिग्रियों के साथ बेरोजगारी की आग में जल रहे हैं।

अगर सब जगहों पर शिक्षा का विकास हो, तो शहरों में भीड़ अधिक नहीं बढ़ेगी तथा प्रदूषण भी कम होगा। कुछ हद तक बेकारी की समस्या भी हल हो जाएगी। अतः इस दिशा में तेजी से व समस्त उपलब्ध साधनों से एकजुट होकर काम करना पड़ेगा ताकि आम शिक्षित वर्ग और शिक्षा-जगत में छाई निराशा दूर हो सके। यह सही है कि आज जीवन में शिक्षा को व्यवसाय का साधन समझा जाने लगा है, पर अब जो स्वरूप बन गया है, उसे सही ढंग से सजाने-सँवारने और उपयोगी बनाने में ही देश का वास्तविक हित है।शिक्षा को व्यवसाय से अलग करके ही कुछ बदलाव लाए जा सकते हैं।

b. **आज की बचत कल का सुख**

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।
जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं।
हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

c. **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।

प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यो के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

8. परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक: 13 मई 20XX
पर्यावरण मंत्री
अ०ज०स० सरकार
गोविन्द नगर।

विषय- सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध नियम के उल्लंघन के संबंध में।

महोदय,

मैं आपका ध्यान सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध नियम का जिस तरह खुलेआम मजाक उड़ाया जा रहा है, उसकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

धूम्रपान की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा कानून बनाया गया था, जिसके अंतर्गत सार्वजानिक स्थलों पर धूम्रपान न करने का प्रावधान था। इसका उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना लगाने, जेल भेजने या दोनों का ही प्रावधान किया गया था। इसका उद्देश्य युवाओं में बढ़ती धूम्रपान की प्रवृत्ति को रोकना, पर्यावरण को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने के अलावा लोगों को स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों से बचाना था। दुर्भाग्य से धूम्रपान के खतरों को जानते हुए भी लोग धूम्रपान कर रहे हैं। वे धूम्रपान संबंधी नियम की परवाह न करके खुले आम सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान कर रहे हैं। ऐसा लगता

है कि उन्हें न तो नियम का डर है और न जुर्माने या दंड का। ऐसा करके वे इस कानून का खुलेआम मजाक उड़ा रहे हैं। ऐसा करके वे समाज और विशेषकर युवाओं के सामने गलत उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। उनका यह कृत्य न उनके हित में है और न समाज के। धूम्रपान निषेध नियम का उल्लंघन करने वालों से सख्ती से निपटने का समय आ गया है।युवा वर्ग पर अधिक सख़्ती की आवश्यकता है क्योंकि इनके ऊपर ही समाज और देश का भार है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि युवाओं और समाज के साथ पर्यावरण के लिए हानिकारी धूम्रपान तथा सार्वजानिक स्थानों पर उसका उपभोग करने वाले के विरुद्ध ठोस कार्यवाही करने का कष्ट करें। इसमें हमारे और हमारे समाज की अगली पीढ़ियों का हित निहित है।

धन्यवाद सहित

भवदीय

गोविन्द वाघेला

OR

261, गाँधी नगर

दिल्ली।

17 अप्रैल, 2019

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक भास्कर,

दिल्ली।

विषय- महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराधों के संबंध में

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से दिल्ली प्रशासन का ध्यान महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराधों की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। आजकल दिल्ली अपराधों का केद्र बनती जा रही है। यहाँ अब महिलाएँ स्वयं को सुरक्षित महसूस नहीं करती। दिन-प्रतिदिन यहाँ अपराधों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। छेड़खानी की घटनाएँ तो आम बात हो गई है।

महिलाओं के प्रति अपराधों के बढ़ने का कारण यह है कि सामाजिक सुरक्षा तथा न्याय व्यवस्था के विषय में अपराधियों को पता होता है कि वह उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। कत्ल, हत्या, छेड़छाड़ कुछ भी हो, कोई भी गवाही देने को तैयार नहीं होता। लोग कोर्ट-कचहरी से डरते हैं। ऐसे डरपोक समाज का फायदा उठाते हुए कुप्रवृत्ति वाले लोग गलत काम करने से बाज़ नहीं आते हैं। चूँकि न्याय व्यवस्था और पुलिस से उन्हें कोई खतरा नहीं, इसी कारण से वे लोग अपनी हरकतों से बाज नहीं आते हैं।

अतः प्रशासन को ऐसी हरकत करने वालों पर निगरानी रखनी चाहिए और इन सभी पहलुओं पर विचार करते हुए ऐसे अपराधियों के खिलाफ़ सख़्त-से-सख्त कदम उठाने चाहिए। मैं चाहती हूँ कि आप अपने समाचारपत्र के जरिये हमारे समाज को इस विषय पर जागरूक करें ताकि हम इन सामाजिक दरिंदों से अपनी रक्षा कर सकें।

धन्यवाद

भवदीया

ऋतिका

9. निम्नलिखित में से 2 प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

a. रेडियो नाटक में पात्रों संबधी तमाम जानकारी हमें संवादों के माध्यम से ही मिलती हैं। उनके नाम, आपसी संबंध, चारित्रिक विशेषताएँ, ये सभी हमें संवादों द्वारा ही उजागर करना होता है। भाषा पर भी आपको विशेष ध्यान रखना होगा। वो पढ़ा-लिखा है कि अनपढ़, शहर का है कि गाँव का, क्या वो किसी विशेष प्रांत का है, उसकी उम्र क्या है, वो क्या रोशगार-धंधा करता है। इस तरह की तमाम जानकारियाँ उस चरित्र की भाषा को निर्धारित करेंगी। फिर पात्रों का आपसी संबंध भी संवाद की बनावट पर असर डालता है। एक ही उदाहरण व्यक्ति अपनी पत्नी से अलग ढंग से बात करेगा, अपने नौकर से अलग ढंग से, आपने बॉस के प्रति सम्मानपूर्वक रवैया अपनाएगा, तो अपने मित्रा वेफ प्रति उसका बराबरी और गरम-जोशी का व्यवहार होगा। ये सब प्रकट होगा उसके संवादों से।

b. दृश्य निर्धारित हो जाने पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दृश्य की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले तथा दृश्य के क्रमिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त संवाद हैं या नहीं। यदि पर्याप्त संवाद नहीं हैं तो उन्हें लिखने का काम किया जाता है। सबसे पहली और महत्त्वपूर्ण शर्त यह है कि नए लिखे संवाद, कहानी के मूल संवादों के साथ मेल खाते हों। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह कि उनके लिखे जाने का सौ प्रतिशत औचित्य हो। तीसरी बात जो ध्यान में रहे वह यह है कि संवाद छोटे, प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में हों। कहानी में छपे लंबे संवाद को पाठक पढ़ सकता है लेकिन मंच पर बोले गए लंबे संवाद से तारतम्य बनाए रख पाना कठिन होता है।

c. यह देखना आवश्यक है कि परिस्थिति, परिवेश, पात्र, कथानक से संबंधित विवरणात्मक टिप्पणियाँ किस प्रकार की हैं। विभिन्न प्रकार के विवरणों को नाटक में स्थान देनेके अलग-अलग तरीके हैं। उदाहरण के लिए विवरणात्मक टिप्पणी यदि परिवेश के बारे में है तो उसे मंच सज्जा के अंतर्गत लिया जा सकता है या पाश्व संगीत के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। विवरण यदि पात्रों के बारे में है तो उन्हें संवादों के माध्यम से निर्धारित दृश्यों में उचित स्थान पर दिया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि कहानी में व्यक्त महत्त्वपूर्ण सूत्रा नाटक के स्वरूप के अनुसार अपनी जगह निर्धारित कर लेते हैं।

d. **कहानी मौलिक हो या चाहे किसी और स्रोत से ली हुई। उसमें निम्न बातों का ध्यान शरूर रखना होगा:-**

i. कहानी ऐसी न हो जो पूरी तरह से एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर करती हो क्योंकि रेडियो पर बहुत श्यादा एक्शन सुनाना उबाऊ हो सकता है।

ii. रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट होती है। श्रव्य माध्यम में नाटक या वार्ता जैसे कार्यक्रमों के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15-30 मिनट ही होती है।

iii. पात्रों की संख्या सीमित हो। श्रोता सिर्फ़ आवाश के सहारे चरित्रों को याद रख पाता है, ऐसी स्थिति में रेडियो नाटक में यदि बहुत श्यादा किरदार हैं तो उनके साथ एक रिश्ता बनाए रखने में श्रोता को दिक्कत होगी। 15

मिनट की अवधि वाले रेडियो नाटक में पात्रों की अधिकतम संख्या 5-6 हो सकती है।

10. निम्नलिखित में से 2 प्रश्नों के उत्तर 40-50 शब्दों में दीजिये: (3+2)

    a. विशेष लेखन के अंतर्गत केवल रिपोर्टिंग ही नहीं अति है बल्कि संबंधित विषय पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा, स्तम्भ लेखन भी आता है। इन विषयों पर अपने विचार अभिव्यक्त करने के संवाददाता का विषय विशेषज्ञ होना परम आवश्यक है।

    b. साफ़-सुथरी और सरल भाषा लिखने के लिए यह जरूरी है कि भाषा में अधिक उपमाओं , विशेषणों आदि का प्रयोग नहीं हुआ हो । मुहावरे भाषा को आकर्षक और प्रभावी बनाते हैं , लेकिन उनका भी जरूरत के हिसाब से ही प्रयोग होना चाहिए । कुछ ऐसे शब्द हैं जैसे - अथवा , किन्तु , परंतु आदि के प्रयोग से बचना चाहिए । इन सब की सहायता से ही समाचार की भाषा सरल और आकर्षक हो सकती है ।

    c. समाचार लेखन की विलोमस्तूपी पद्धति अथवा उल्टा पिरामिड पद्धति में समाचार लिखते हुए उसका चरमोत्कर्ष प्रारंभ में दिया जाता है तथा घटनाक्रम की व्याख्या करते हुए अंत किया जाता है।

    d. वस्तुतः फीचर किसी वस्तु, घटना, स्थान या व्यक्ति विशेष की विशेषताओं को उद्घाटित करने वाला विशिष्ट आलेख है, जिसमे सर्जनात्मकता, काल्पनिकता, तथ्य, घटनाएँ, विचार, भावनाएँ आदि एक साथ उपस्थित रहती हैं। इसके सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं -

        i. सरसता एवं सहजता
        ii. प्रासंगिकता एवं विश्वसनियता

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

    a. दूरदर्शन पर एक अपाहिज का साक्षात्कार व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दिखाया जाता है। दूरदर्शन पर एक अपाहिज को प्रदर्शन की वस्तु मान कर उसके मन की पीड़ा को बेदर्दी से कुरेदा जाता है, उसे खुलेआम भुनाया जाता है। साक्षात्कारकर्ता को उसके निजी सुख- दुख से कुछ लेना-देना नहीं होता। यहाँ पर कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले इस प्रकार के अधिकांश कार्यक्रम केवल संवेदनशीलता, सहानुभूति का दिखावा ही नहीं करते बल्कि बिना किसी लोक-मर्यादा के उसका फायदा उठाने से भी नहीं हिचकते अर्थात उनकी कथनी और करनी में पूर्णत: अन्तर होता है।

    b. कविता में नीले नभ को राख से लीपे गीले चौके के समान बताया गया है। दूसरे बिंब में उसकी तुलना काली सिल से की गई है। तीसरे में स्लेट पर लाल खड़िया चाक का उपमान है। लीपा हुआ चौका काली सिल या स्लेट गाँव के परिवेश से ही लिए गए हैं। प्रातः कालीन सौंदर्य क्रमशः विकसित होता है। सर्वप्रथम राख से लीपा चौका जो गीली राख के कारण गहरे स्लेटी रंग का अहसास देता है और पौ फटने के समय आकाश के गहरे स्लेटी रंग से मेल खाता है। उषा उसके पश्चात तनिक लालिमा के मिश्रण से काली सिल का जरा से लाल केसर से धुलना सटीक उपमान है

तथा सूर्य की लालिमा के रात की काली स्याही में घुल जाने का सुंदर बिंब प्रस्तुत करता है। धीरे-धीरे लालिमा भी समास हो जाती है और सुबह का नीला आकाश नील जल का आभास देता है व सूर्य की स्वर्णिम आभा गौरवर्णी देह के नील जल में नहा कर निकलने की उपमा को सार्थक सिद्ध करती है।

c. मूर्च्छित लक्ष्मण को गोद में लेकर विलाप कर रहे श्रीराम कहते हैं कि तुम्हारे बिना मेरी दशा ऐसी हो गई है जैसे पंखों के बिना पक्षी, मणि के बिना सर्प और सूँड़ के बिना श्रेष्ठ हाथी की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है, वैसे ही तुम्हारे बिना यदि कहीं जड़ दैव ने मुझे जीवित रखा तो मेरा जीवन भी ऐसा ही दयनीय हो जायेगा।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. **सहर्ष स्वीकारा है** कविता में कवि का संबोध्य कविता का 'तुम' है और यह 'तुम' कवि का सर्वाधिक 'प्रिय' एक अज्ञात व्यक्तित्व है। यह कवि की प्रेयसी भी हो सकती है या कवि की माँ भी, लेकिन जो भी है, वह कवि के लिए अत्यधिक प्रेरणादायक एवं कवि के संपूर्ण व्यक्तित्व का एकमात्र निर्माता है।
मेरी दृष्टि में कविता का 'तुम' कवि की प्रेयसी हो सकती है, जिसके साथ के संबंध को कवि कोई नाम देना नहीं चाहता, लेकिन इस 'अनाम' संबंध की गहराई को वह स्वयं महसूस करता है। कवि कहता है कि उसके प्रिय का प्रेम उस अनंत निर्झर के समान है, जिसका मीठा पानी बार-बार उसे पूरी तरह भिगोता रहता है।

b. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर यह बताना चाहता है कि सावन मास में रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता है । इन दिनों जोरदार बारिश होती है,बादलों में जिस तरह बिजली चमकती है उसी प्रकार बहनें चमकती राखी भाई के हाथों में बाँधकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है। रक्षाबंधन एक मधुर प्रेम का बंधन है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से होता है, राखी के लच्छे उसी संबंध का प्रतीक है।

c. कुंभकरण रावण का भाई है। वह लंबे समय तक सोता रहता है। उसका शरीर विशाल है। देखने में ऐसा लगता है मानो काल आकर बैठ गया। वह मुँहफट तथा स्पष्ट वक्ता है। वह रावण से पूछता है कि तुम्हारे मुँह क्यों सूखे हुए हैं? रावण की बात सुनने पर वह रावण को फटकार लगाता है तथा उसे कहता है कि अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। इस प्रकार उसने रावण को उसके विनाश संबंधी सच्चाई का आईना दिखाया।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिये:

a. भक्तिन के ससुरालवालों का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं था। घर की महिलाएँ चाहती थी कि भक्तिन का पति उसकी पिटाई करे। वे उस पर रौब जमाना चाहती थीं। इसके अतिरिक्त, भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया, जबकि उसके सास व जेठानियों ने लड़के पैदा किए थे। इस कारण उसे सदैव प्रताड़ित किया जाता था। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने भक्तिन पर पुनर्विवाह के लिए दबाव डाला। उसकी विधवा लड़की के साथ जबरदस्ती की। अंत में, भक्तिन को गाँव छोड़ना पड़ा।

b. आषाढ़ का महीना वर्षा ऋतु के आगमन का प्रतीक है। इस ऋतु में आकाश में छाए बादल किसानों में अच्छी एवं नयी

फसल की आशा जगाते हैं। इसी महीने में अधिकतम वर्षा भी होती है। इस कारण आषाढ़ शुरू होते ही किसानों में उम्मीद और उल्लास बढ़ने लगता है। वे नई उम्मीद से जुताई-बुवाई के कार्य में लग जाते हैं।

c. शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने के पीछे यह तर्क देते हैं कि उक्त बातें मनुष्य के अपने हाथ में नहीं हैं बल्कि मनुष्य के अपने हाथ में उसके अपने प्रयत्न हैं। समाज के सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने के लिए, सबको अपनी क्षमता को विकसित करने तथा रुचि के अनुरूप व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। राजनीतिज्ञ को अपने व्यवहार में एक व्यवहार्य सिद्धांत लाने की आवश्यकता रहती है और यह व्यवहार्य सिद्धांत यही होता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। उन्हें समान अवसर दिए जाए ताकि उनमें मानसिक स्तर पर भेदभाव उत्पन्न न हो।

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 30-40 शब्दों में दीजिये:

a. बाजार की चमक-दमक के चुंबकीय आकर्षण को बाजार का जादू कहा गया है, यह जादू आंखों की राह कार्य करता है। बाजार के इसी आकर्षण के कारण ग्राहक सजी-धजी चीजों को आवश्यकता न होने पर भी खरीदने को विवश हो जाते हैं।

b. लुट्टन ने कुश्ती के दाँव-पेंच किसी गुरु से नहीं बल्कि ढोल की आवाज या थाप से सीखे थे। ढोल से निकली हुई ध्वनियाँ उसे दाँव-पेच सिखाती हुई और आदेश देती हुई प्रतीत होती थी। जब ढोल पर थाप पड़ती थी तो पहलवान की नसें उत्तेजित हो जाती थी, उसका शरीर सामने वाले को मसलने और मन सामने वाले को पछाड़ने के लिए मचलने लगता था। पहली कुश्ती में जीतने पर उसने ढोल को गुरु मानकर प्रणाम किया था इसलिए लुट्टन पहलवान ने ऐसा कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है।

c. लाहौर की याद में सिख बीबी इतनी भावुक हो उठी कि उसकी आँखों से आँसू निकलकर उसके सफ़ेद मलमल के दुपट्टे पर टपक पड़े।